International Journal of Advance and Applied Research
www.ijaar.co.in
ISSN – 2347-7075 Impact Factor – 7.328
Peer Reviewed Bi-Monthly
Vol.11 No.3 January – February 2024

# हिंदी भाषा पर सोशल मीडिया का प्रभाव: एक अध्ययन

**सहा. प्रा. स्वाती संदिप चौधरी**

*सहा. प्राध्यापक, हिंदी विभाग,*

*श्रीमती कस्तूरबाई वालचंद कॉलेज ऑफ आर्ट्स एंड साइंस, सांगली*

***Corresponding Author - सहा. प्रा. स्वाती संदिप चौधरी***

**DOI - 10.5281/zenodo.22070057**

***सारांश:***

*वर्तमान डिजिटल युग में 'सोशल मीडिया' हिंदी भाषा के प्रयोग, प्रसार और विकास का एक प्रभावशाली माध्यम बन गया है। फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब आदि प्लेटफार्मों के माध्यम से हिंदी का प्रयोग व्यापक सामाजिक समूहों तक पहुँच रहा है। प्रस्तुत आलेख का उद्देश्य सोशल मीडिया के हिंदी भाषा पर पड़ने वाले सकारात्मक एवं नकारात्मक प्रभावों का विश्लेषण करना है। अध्ययन में गुणात्मक एवं मात्रात्मक दोनों प्रकार की अनुसंधान पद्धतियों का प्रयोग किया गया है तथा सर्वेक्षण, साक्षात्कार, प्रश्नावली और सोशल मीडिया सामग्री के विश्लेषण को आधार बनाया गया है। अध्ययन से स्पष्ट होता है कि सोशल मीडिया ने हिंदी की अभिव्यक्ति, लोकप्रियता, ज्ञान-विज्ञान, शैक्षिक सामग्री तथा सांस्कृतिक पहचान के विस्तार में महत्वपूर्ण योगदान दिया है। दूसरी ओर, संक्षिप्त लेखन, अशुद्ध वर्तनी, व्याकरणिक त्रुटियों, अंग्रेजी शब्दों के अत्यधिक प्रयोग तथा क्षेत्रीय बोलियों के मिश्रण से हिंदी की शुद्धता और पारंपरिक स्वरूप को चुनौतियाँ भी प्राप्त हुई हैं। अतः हिंदी भाषा के संरक्षण एवं संवर्धन के लिए डिजिटल माध्यमों के सकारात्मक उपयोग, भाषाई जागरूकता, शैक्षिक प्रयासों तथा प्रभावी नीतिगत दिशानिर्देशों की आवश्यकता है। सोशल मीडिया का संतुलित एवं जिम्मेदार प्रयोग हिंदी को आधुनिक, जीवंत और वैश्विक स्तर पर अधिक प्रभावशाली बनाने में सहायक हो सकता है।*

***प्रमुख शब्द: हिंदी भाषा, सोशल मीडिया, डिजिटल संचार, भाषा-विकृति, भाषा संरक्षण, भाषा विकास, सांस्कृतिक पहचान, हिंदी का प्रसार, शैक्षिक प्रभाव, डिजिटल युग।***

**प्रस्तावना:**

हिंदी भाषा का सामाजिक व भाषाई परिदृश्य निरंतर बदलते डिजिटल युग में नए संदर्भों एवं चुनौतियों के समक्ष खड़ा है। प्रसार माध्यमों और डिजिटल संचार के विस्तृत माध्यमों के आविर्भाव ने भाषाई विचलनों एवं सामान्यीकरण के नए आयाम प्रस्तुत किए हैं। सोशल मीडिया के व्यापक प्रयोग से भाषा का प्रयोगकर्ता वर्ग भी व्यापक और विविध हो गया है, जिससे भाषाई संवाद की गति और विस्तार में वृद्धि हुई है। इस प्रवृत्ति का परिणामस्वरूप हिंदी भाषा के स्वरूप, उसकी समृद्धि और प्रामाणिकता पर सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों ही प्रकार के

प्रभाव देखे गए हैं। एक ओर यह प्रवृत्ति भाषा के सहज और प्रवाहमय प्रयोग को प्रोत्साहित करती है, वहीं दूसरी ओर इसे विकृतियों एवं शुद्धता की ह्रास की संभावनाएँ भी बढ़ाती है।

सामाजिक मीडिया प्लेटफार्मों ने संचार के नए मानक स्थापित किए हैं, जिससे भावनाओं, विचारों एवं आदान-प्रदान की प्रक्रिया तीव्रगतिः संपन्न होकर भाषा की विविधता और नवीनता को जन्म देती है। इन माध्यमों पर हिंदी के प्रयोग में प्रौद्योगिकी आधारित स्वचालित सुधार और अस्तव्यस्त शैली दोनों पर प्रभाव पड़ा है, जिसका दीर्घकालिक प्रभाव सांस्कृतिक और भाषाई पहचान पर भी पड़ सकता है। साथ ही, शब्दावली, वाक्य संरचना एवं शैलीगत विविधताओं का पन्ना बहुत तेजी से विकसित हो रहा है। यह प्रवृत्ति व्यक्तियों को अपनी भाषा के प्रति जागरूक बनाती है, परंतु उसकी शुद्धता एवं परंपरागतता को भी चुनौती दी है।

वास्तव में, जनसामान्य का संवाद, अभिव्यक्ति और सीखने के तरीके भी सोशल मीडिया के प्रभाव से अभिन्न रूप से जुड़ गए हैं। इसलिए, हिंदी भाषा का डिजिटल परिवेश में समुचित संरक्षण, विकास और सुदृढ़ता सुनिश्चित करने हेतु उचित रणनीतियों का अवलंब अत्यंत आवश्यक हो जाता है। इस संदर्भ में भाषा विशेषज्ञ, शिक्षाविद् एवं नीति-निर्माता मिलकर ऐसे कदम उठाए जो हिंदी भाषा का संरक्षण, आधुनिकरण एवं वृद्धि सुनिश्चित कर सकें। अतः इस अध्ययन का यह प्रस्तावना न केवल हिंदी भाषा के वर्तमान प्रयोग का अवलोकन प्रस्तुत करता है, बल्कि उसकी वैश्विक एवं डिजिटल संदर्भ में विशिष्ट पहचान सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक दिशा-निर्देश का भी आधार बनता है।

**अध्ययन की पद्धति:**

अध्ययन की पद्धति में क्वॉलिटेटिव और क्वांटिटेटिव दोनों प्रकार के अनुसंधान उपकरणों का समुचित उपयोग किया गया है। शोध प्रक्रिया की शुरुआत में प्राथमिक एवं द्वितीयक स्रोतों का संग्रह किया गया, जिनमें सोशल मीडिया प्लेटफार्मों से संबंधित डेटा, अभिलेखीय जानकारी एवं पूर्व में प्रकाशित साहित्य सम्मिलित हैं। प्राथमिक डेटा संग्रह के लिए सर्वेक्षण और स्वतंत्र साक्षात्कार का सहारा लिया गया, जिससे विभिन्न आयु वर्ग, क्षेत्रीय पृष्ठभूमि और सामाजिक वर्ग के प्रतिभागियों से विविध मत प्राप्त हो सके। इन साक्षात्कारों में सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग, उसकी स्थिति और प्रभाव को लेकर विशिष्ट प्रश्न पूछे गए।

गृहस्थीय प्रश्नावली के माध्यम से एक बड़े आंकड़े का संकलन किया गया, जिसमें हिंदी भाषा का सोशल मीडिया पर उपयोग करने वाले उपयोगकर्ताओं की आदतें, उनकी भाषा संबंधी आदर्श एवं भ्रांतियों का अध्ययन किया गया। इन

प्रश्नावली के अतिरिक्त, फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम जैसे प्लेटफार्मों से सेंसरशिप मुक्त डेटा का विश्लेषण किया गया, ताकि सामाजिक संचार के विविध आयामों में हिंदी का प्रयोग एवं उसकी विकृतियों का स्पष्ट चित्रण सामने आ सके। इस डेटा का विश्लेषण करने हेतु सांख्यिकीय उपकरण जैसे कि एसपीएसएस और डेस्कटॉप एनालिटिक्स सॉफ्टवेयर का प्रयोग किया गया।

सांख्यिकीय विश्लेषण के साथ-साथ विषयवस्तु विश्लेषण (थीमेटिक एनालिसिस) के माध्यम से सोशल मीडिया पर प्रकाशित सामग्री, उपयोगकर्ता टिप्पणियों एवं संवाद की प्रवृत्तियों का अध्ययन किया गया। इससे यह ज्ञात हुआ कि हिंदी भाषा का प्रयोग किस प्रकार विकसित हो रहा है, उसमें किन प्रवृत्तियों का सुनिश्चित प्रभाव पड़ा है, तथा भाषा विकृतियों के उदाहरण भी सामने आए हैं। इन दोनों दृष्टिकोणों से प्राप्त परिणामों का तुलनात्मक विश्लेषण किया गया, जिससे अध्ययन को सूक्ष्म एवं विश्वसनीय आधार मिला। इस अध्ययन में स्थानीय, राष्ट्रीय और वैश्विक स्तर पर सोशल मीडिया के प्रभाव का समग्र अध्ययन किया गया है, ताकि विविध सामाजिक एवं भाषाई संदर्भों में हिंदी की स्थिति और उसमें आए परिवर्तनों को समझा जा सके।

**सामाजिक संचार में हिंदी की भूमिका:**

सामाजिक संचार में हिंदी की भूमिका अत्यंत महत्त्वपूर्ण और निर्णायक है। वर्तमान युग में सोशल मीडिया ने संचार के तरीके को क्रांतिकारक रूप से परिवर्तित कर दिया है, जिससे हिंदी भाषा का प्रयोग दिन-ब-दिन व्यापक होता जा रहा है। सोशल मीडिया प्लेटफ़ॉर्म जैसे फेसबुक, ट्विटर, इंस्टाग्राम, व्हाट्सएप आदि ने हिंदी को न सिर्फ चर्चा का माध्यम बनाया है, बल्कि जीवन के अनेक क्षेत्रों में इसकी उपस्थितिः को और भी मजबूत किया है। इन माध्यमों पर हिंदी का प्रयोग संवाद को सहजता, दक्षता और अधिक प्रभावी बनाता है। इससे भाषा की पहुँच घर-घर तक हुई है, विशेषकर युवाओं में इसकी लोकप्रियता न केवल भाषा के संरक्षण में सहायक सिद्ध हो रही है, बल्कि नए शब्दावली और अभिव्यक्तियों के संचार में भी वृद्धि हो रही है। इसके माध्यम से सामाजिक मुद्दों, सांस्कृतिक परंपराओं और दैनिक जीवन के पहलुओं को हिंदी में व्यक्त किया जाना सामान्य बात बन गई है। सामाजिक संचार में हिंदी का प्रयोग बढ़ने से भाषा के प्रति जागरूकता और अभिरुचि का स्तर भी बढ़ रहा है, जिससे उसकी शुद्धता और प्रामाणिकता भी बनाये रखने के प्रयास किए जा रहे हैं। साथ ही, डिजिटल संवाद के माध्यम से हिंदी का 'संरक्षण एवं संवर्धन' संभव हुआ है, जिसके परिणामस्वरूप नई पीढ़ी में

इसकी स्वीकार्यता और आत्मगौरव मजबूत हो रहा है। इसलिए, सोशल मीडिया का प्रभाव हिंदी भाषा के विकास एवं प्रसार में सहायक सिद्ध हो रहा है, जो इसे लोकभाषा के रूप में अधिक समृद्ध और जीवंत बनाता है। यह एक ऐसा संचार माध्यम है, जो हिंदी की अभिव्यक्ति क्षमता को विस्तारित करता है और सामाजिक समरसता के साथ भाषा संरक्षण के दायित्व को भी निभाता है।

**सोशल मीडिया के प्रकार और उनके प्रभाव:**

सोशल मीडिया का प्रकार एवं उनके प्रभाव का विश्लेषण आवश्यक है क्योंकि यह प्रचलित प्लेटफार्म भाषाई संरचना एवं प्रयोग शैली को प्रभावित करता है। वर्तमान में प्रमुख सोशल मीडिया प्लेटफार्मों में फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, इंस्टाग्राम, यूट्यूब एवं टिकटॉक शामिल हैं। फेसबुक तथा ट्विटर पर संक्षिप्त तथा प्रभावी वाक्यविन्यास का प्रयोग अधिक होता है, जिससे भाषाई निरंतरता और औपचारिकता में कमी आ सकती है। व्हाट्सएप जैसे मैसेजिंग ऐप्स पर संवाद का स्वरूप अत्यंत अभिव्यक्तिपूर्ण एवं सहज होता है, जिससे प्रमुख रूप से संवाद की प्रवृत्ति में बदलाव आया है। वहीं, इंस्टाग्राम और टिकटॉक जैसी प्लेटफार्में दृश्य एवं लघु वीडियो पर आधारित हैं, जिनमें संवाद अधिकतर संवादात्मक और आकस्मिक शैली में होते हैं। यूट्यूब पर वीडियो प्रारूप में शिक्षा और संवाद के विविध आयाम विकसित हुए हैं। इन प्लेटफार्मों का प्रभाव भाषा पर प्रत्यक्ष और अप्रत्यक्ष दोनों ही रूपों में देखा जा सकता है। प्रारंभिक प्रभाव में भाषा की सजगता और शुद्धता में गिरावट आई है, क्योंकि संक्षिप्तता और त्वरित संवाद की प्रवृत्ति ने वाक्य रचनाओं को सरल एवं सहज प्रवाहमय बनाना शुरू कर दिया है। दूसरी ओर, सोशल मीडिया ने विचारों के प्रसार, नवाचार और समसामयिक भाषा के विकास में भी सहायता दी है। यह प्रभाव भाषा के व्याकरणिक नियमों, शब्दावली, अभिव्यक्ति के तरीके व आत्मसंतुलन को प्रभावित करता है। खासकर युवा वर्ग में पोस्ट, कमेंट एवं संदेशों में भाषा का स्वरूप अधिकतर अपरिष्कृत और क्षेत्रीय बोलियों से प्रभावित होने लगा है। इसके अलावा, कई बार गलत वर्तनी, व्याकरण की अनियमितता और संक्षेपण की प्रवृत्ति भाषा की शुद्धता को चुनौती दे रही है। अतः इन प्रभावों के संतुलन और सुधार हेतु नीतिगत प्रयास आवश्यक हैं। सम्पूर्णतः सोशल मीडिया के विभिन्न प्रकार और उनकी प्रवृत्तियाँ हिंदी भाषा के स्वरूप, प्रयोग और संरक्षण के संदर्भ में प्रमुख भूमिका निभा रही हैं, जिनके सकारात्मक एवं नकारात्मक दोनों पहलुओं का सतत अवलोकन एवं मूल्यांकन आवश्यक है।

**भाषा विकृति और सावधानियाँ:**

सोशल मीडिया के प्रभाव ने हिंदी भाषा के व्याकरण, शब्दावली एवं वर्तनी पर नकारात्मक एवं सकारात्मक दोनों प्रकार के प्रभाव डाले हैं। इन प्रभावों में से एक महत्वपूर्ण समस्या भाषा विकृति की वृद्धि है, जिसमें अशुद्धता, अपप्रयोग एवं नवीन शब्दों का अत्यधिक प्रयोग प्रचलित हो रहा है। अतः भाषा को संरक्षित एवं सुसज्जित रखने के लिए आवश्यक है कि भाषा का गंभीरता से संरक्षण किया जाए। सबसे पहले, सोशल मीडिया पर अभिव्यक्ति की स्वतंत्रता का अतिशयोक्ति में प्रयोग अनेक बार अशुद्ध एवं असंगत भाषा के प्रयोग को जन्म देता है, जो भाषा की शुचिता को बाधित करता है। दूसरा, अत्यधिक संक्षेपण व संक्षिप्त भाषा का प्रयोग सामान्यतः भाषा की परंपरागत संरचना को भेदते हुए आधुनिकता का आडंबर प्रस्तुत करता है। वैसे, यह भी देखा गया है कि नए शब्द और अभिव्यक्तियाँ भाषा में जीवंतता लाती हैं; परंतु यह आवश्यक है कि इनका प्रयोग सीमित एवं संतुलित स्तर पर हो। तीसरा, सोशल मीडिया पर बोली जाने वाली भाषा में महानगरों की अभिव्यक्ति और लोकल बोलियों का मिश्रण भाषा की स्वाभाविकता एवं पारंपरिकता का ह्रास कर रहा है। अतः जागरूकता अभियान एवं शैक्षिक प्रयासों के माध्यम से सही भाषा के प्रयोग को प्रोत्साहित करना चाहिए। चौथा, अनावश्यक अंग्रेज़ी शब्दावली एवं तकनीकी शब्दों का भारी उपयोग भी हिंदी की मौलिकता एवं सच्चाई को प्रभावित कर रहा है। इस प्रवृत्ति से बचाव के लिए मीडिया एवं शिक्षण संस्थानों को प्रशिक्षण एवं जागरूकता अभियान चलाना चाहिए। अंततः, भाषा का संरक्षण केवल सरकार या विशेषज्ञों का कार्य नहीं है, बल्कि प्रत्येक नागरिक की जिम्मेदारी है कि वह सामाजिक संचार में सही एवं सटीक भाषा का प्रयोग करे। इन प्रयासों से हम हिंदी भाषा की समृद्धि एवं स्थिरता को कायम रखने में सहायक हो सकते हैं।

**ज्ञान-विज्ञान और शैक्षिक प्रभाव:**

सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा का ज्ञान-विज्ञान और शैक्षिक क्षेत्र में तुलनात्मक रूप से तेजी से विकास हुआ है। इसके प्रभाव से न केवल भाषा के प्रसार और लोकप्रियता में वृद्धि हुई है, बल्कि उसकी वैज्ञानिक और शैक्षिक गुणवत्ता पर भी उल्लेखनीय परिणाम दृष्टिगोचर हो रहे हैं। सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ रहा है, जिससे आम जनता को हिंदी में विषयों का अध्ययन, शोध की प्रक्रिया सहज और सुलभ हो गई है।

विज्ञान और तकनीकी ज्ञान के क्षेत्र में हिंदी का अनूदित साहित्य, शोध पत्र और ऑनलाइन संसाधनों की संख्या में वृद्धि हुई है, जो विद्यार्थी, शोधकर्ता और शिक्षकों के लिए अत्यंत उपयोगी

सिद्ध हो रहे हैं। इससे शिक्षण और अध्ययन का तरीका अधिक प्रभावी, अधिक इंटरैक्टिव और व्यापक हो गया है। साथ ही, सोशल मीडिया के माध्यम से विज्ञान संबंधी जटिल अवधारणाएँ भी सरल भाषा में प्रस्तुत हो रही हैं, जिनसे जिज्ञासा उत्पन्न होती है और सीखने की इच्छा जागृत होती है।

इसके अतिरिक्त, शैक्षिक सामग्री का हिंदी में उपलब्ध होना सामाजिक समानता को भी बढ़ावा देता है। ग्रामीण और दूरदराज के क्षेत्रों के विद्यार्थियों के लिए उच्च गुणवत्ता वाली शिक्षा सामग्री का प्रसारण संभव हो पाया है, जिससे उनकी शैक्षिक प्रतिस्पर्धा में वृद्धि हुई है। यह परिवर्तन शिक्षा के लोकतंत्रीकरण का आधार बन रहा है, जिसमें हिंदी को माध्यम बनाकर अधिक से अधिक व्यक्ति ज्ञान प्राप्त कर सकते हैं।

हालांकि, सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग तेजी से बढ़ने के साथ ही कुछ वैज्ञानिक और गुणवत्तापूर्ण मानकों का ध्यान रखना आवश्यक है। भाषा की सहजता और प्रवाह को बनाए रखते हुए, वैज्ञानिक तथ्यों और शैक्षिक सामग्री की सत्यता और प्रमाणिकता सुनिश्चित करना भी अनिवार्य है। इससे भाषा का वैज्ञानिक स्वरूप प्रभावित नहीं होगा और अध्ययन एवं शोध के मानक भी उच्चस्तरीय रहेंगे।

इस प्रकार, सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी भाषा का ज्ञान-विज्ञान और शैक्षिक प्रभाव न केवल व्यापक हुआ है, बल्कि इसे और मजबूत बनाने के प्रयास भी आवश्यक हैं। सही दिशा में सतत प्रयास करने से हिंदी भाषा की वैज्ञानिकता, ज्ञान-विज्ञान और शिक्षण क्षेत्र में उसकी प्रगति सतत और दीर्घकालिक हो सकेगी।

**लोकाचार, पहचान और सांस्कृतिक स्थायित्व:**

सोशल मीडिया के माध्यम से हिंदी की लोकाचार, पहचान और सांस्कृतिक स्थायित्व पर गहरा प्रभाव पड़ा है। डिजिटल युग में सोशल मीडिया न केवल संवाद का माध्यम बना है, बल्कि यह हिंदी भाषा की आत्मा और उसकी सांस्कृतिक विरासत को भी नई ऊर्जा दे रहा है। भारतीय समाज में भाषा का उपयोग सदियों से संवेदना, परंपरा और संस्कृति का अभिव्यक्ति का महत्वपूर्ण माध्यम रहा है। वर्तमान में सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग अधिक व्यापक और सहज हो चुका है, जिससे इसकी स्वीकार्यता और प्रभावशीलता में वृध्दि हुई है।

हिंदी भाषा की लोकप्रियता और प्रयोग में यह वृद्धि उसकी सांस्कृतिक पहचान का मजबूत आधार बनती जा रही है। सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग विभिन्न प्लेटफार्मों जैसे फेसबुक, ट्विटर, व्हाट्सएप, यूट्यूब आदि पर बढ़ते देखने को मिल

रहा है। यह भाषा विविध सामाजिक समूहों के बीच संवाद स्थापित करने का माध्यम बन गई है, जिससे समरसता और राष्ट्रीय भावना का विस्तार होता है। इसके साथ ही, यह भाषा युवा पीढ़ी के बीच स्वाभाविक और सजीव बनती जा रही है, जो इसकी सांस्कृतिक विरासत को सुरक्षित रखने में सहायक है।

वहीं, इसकी विशिष्टता और सांस्कृतिक संदर्भों का संरक्षण भी आवश्यक है। सोशल मीडिया पर सक्रिय हिंदी के प्रयोग से सांस्कृतिक परंपराओं, साहित्यिक धरोहरों और लोकाचार का प्रचार-प्रसार होता है, जो स्थायित्व का प्रतीक है। यह भाषा न केवल जीवंतता का अनुभव कराती है बल्कि विभिन्न क्षेत्रों की भाषाई विविधता को भी सामंजस्य में लाने का कार्य करती है। हिंदी का इन प्लेटफार्मों पर प्रयोग उसकी संवादात्मक क्षमता और सांस्कृतिक पहचान को मजबूत बनाता है, जिससे पारंपरिक मूल्यों एवं आधुनिकता का सुंदर समन्वय संभव होता है।

इसके परिणामस्वरूप, हिंदी का उस समाज में विशेष स्थान बनता है, जहाँ उसकी पहचान मजबूत होती है और सांस्कृतिक स्थायित्व सुनिश्चित होता है। सोशल मीडिया पर सक्रिय हिंदी का प्रयोग राष्ट्रीय संस्कृति की स्थिरता और उसकी विविधता को कायम रखने का आधार बनता है। इससे यह भाषा नई पीढ़ी के बीच जीवंत रहती है और सांस्कृतिक जागरूकता का संचार भी होता है। इसलिए, यह आवश्यक है कि सोशल मीडिया का सकारात्मक और संवेदनशील उपयोग कर हिंदी भाषा का यह सांस्कृतिक धरोहर सुरक्षित और समृद्ध किया जाए।

**नीति-निर्माण और शासी निकायों के सुझाव:**

नीति-निर्माण एवं शासी निकायों के समक्ष हिंदी भाषा के प्रभाव और परिवर्तन के प्रभावी प्रबंधन हेतु स्पष्ट योजना और नियमित निगरानी आवश्यक है। संबद्ध विभागों एवं मंत्रालयों को भाषा के संरक्षण एवं प्रसार के लिए समर्पित नीति बनानी चाहिए, जो डिजिटल माध्यमों में हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने पर केंद्रित हो। इनमें सोशल मीडिया के प्रभावी उपयोग के लिए विशिष्ट मानकों एवं दिशानिर्देश का निर्माण, हिंदी भाषा के प्रचार-प्रसार के लिए समय-समय पर विशेष अभियान और नई पीढ़ी में उसकी आत्मीयता को बनाए रखने हेतु संसाधनों का सृजन आवश्यक है। इसके अतिरिक्त, शासी निकायों को सोशल मीडिया प्लेटफार्मों पर हिंदी के प्रयोग को प्रोत्साहित करने के लिए संपूर्ण कूटनीतियों का विकास करना चाहिए, जिसमें प्रमुख भूमिका-केंद्रित पहल, पुरस्कार वितरण प्रणाली तथा हिंदी भाषा के उपयोग को विशेष प्राथमिकता प्रदान करना शामिल है।

सार्वजनिक एवं निजी क्षेत्र की भागीदारी से हिंदी के डिजिटल प्राक्कलनों का प्रसार सुनिश्चित

किया जाना चाहिए। साथ ही, तकनीकी एवं शैक्षिक संस्थानों के सहयोग से ऐसी नीतियों का विकास किया जाना चाहिए, जो हिंदी के सम्यक उपयोग को प्रोत्साहित करते हुए भाषा की गरिमा को बनाये रखें। इसके अंतर्गत सोशल मीडिया पर हिंदी के प्रयोग में गुणवत्ता बरकरार रखने और भाषा विकृति को रोकने हेतु आवश्यक दिशानिर्देश निर्धारण करना आवश्यक है। इन पहलों का उद्देश्य न केवल हिंदी भाषा की समृद्धि को प्रेरित करना है, बल्कि इसकी आधुनिकता तथा वैश्विक स्वीकार्यता को भी बनाए रखना है।

इन प्रयासों में शासकीय एवं स्वतंत्र विशेषज्ञ समितियों का गठन कर उनकी जिम्मेदारी तय करनी चाहिए, जो इन नीतियों के क्रियान्वयन एवं सतत मूल्यांकन का कार्य संभालें। यह सुनिश्चित करने हेतु आवश्यक है कि सोशल मीडिया का सकारात्मक प्रभाव भाषा संरक्षण एवं विकास का माध्यम बने, ताकि हिंदी भाषा की अमिट विरासत और सांस्कृतिक गौरव धीरे-धीरे सुदृढ़ होते रहें।

**निष्कर्ष:**

सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा के प्रयोग और प्रचार में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई है, जिससे भाषा का प्रसार तीव्रता से हुआ है। इस अध्ययन में स्पष्ट हुआ है कि सोशल मीडिया राष्ट्रभाषा के रूप में हिंदी को नई ऊर्जा देने में सहायक सिद्ध हो रहा है। साथ ही, डिजिटल संचार की प्रवृत्ति ने सरलता और सहजता को बढ़ावा दिया है, जिससे भाषा संबंधी योग्यता का विकास हुआ है। तथापि, यह भी ध्यान देना आवश्यक है कि इस माध्यम के व्यापक प्रयोग से भाषा की शुद्धता एवं माधुर्य में गिरावट के संकेत भी देखे गए हैं। वर्तनी और व्याकरणिक त्रुटियाँ आम होती जा रही हैं, जो भाषा विकृति का संकेत हैं। अतः, भाषा संरक्षण और उन्नयन हेतु नीतिगत उपाय और जागरूकता अभियानों की आवश्यकता उत्तरोत्तर बढ़ रही है। यह भी उल्लेखनीय है कि सोशल मीडिया पर हिंदी का प्रयोग विविध सांस्कृतिक व शैक्षिक मंचों पर ज्ञान-विज्ञान के विस्तार का माध्यम बना है, जिससे राष्ट्रीय चेतना और सांस्कृतिक पहचान मजबूत हुई है। प्रशासनिक और शासी निकायों ने इस परिवर्तन को दृष्टिगत रखते हुए, हिंदी के संरक्षण और प्रसार हेतु प्रभावी योजनाएँ बनानी और कार्यान्वित करनी चाहिए। यह सुनिश्चित करना जरूरी है कि सोशल मीडिया प्रवृत्तियों का सकारात्मक लाभ प्राप्त हो, साथ ही भाषा की शुद्धता और सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण भी प्रभावी ढंग से किया जाए। इस प्रक्रिया में जागरूकता एवं शिक्षा का व्यापक अभियान अत्यंत आवश्यक है। अंततः, यह पाया गया है कि सोशल मीडिया ने हिंदी भाषा को नई ऊर्जा और व्यापकता प्रदान की है, किन्तु यह अपने साथ कुछ चुनौतियां भी लेकर आया है, जिनके समुचित समाधान एवं

सतत प्रयासों से हिंदी भाषा का समुचित संरक्षण संभव है।

**संदर्भ सूची:**


1. रानी, प्रियंका। (2022)। सोशल मीडिया पर हिंदी भाषा की स्थिति। *Idealistic Journal of Advanced Research in Progressive Spectrums (IJARPS)*।
2. जोशी, किरण। (2025)। भाषा-विज्ञान और समकालीन हिन्दी: सोशल मीडिया तथा युवा पीढ़ी की हिंग्लिश संस्कृति का अध्ययन। *Revista Review Index Journal of Multidisciplinary, 5*(2), 72–77. https://doi.org/10.31305/rrijm2025.v05.n02.009
3. मंडल, दिलीप, एवं यादव, गीता। (2021)। *अनसोशल नेटवर्क* (द्वितीय संस्करण)। राजकमल प्रकाशन।
4. झा, अजय कुमार। (2025)। *सोशल मीडिया और चुनाव: जन जन के मंच से ईवीएम बटन तक असरदार*। AKJ Tech and Media Communication।
5. शर्मा, रिचा, निगम, श्वेता, एवं जैन, रेखा। (2014)। Opinion mining in Hindi language: A survey. *arXiv*. https://arxiv.org/abs/1404.4935
6. शर्मा, अर्णव, गुप्ता, साक्षी, मोटलानी, रवीश, बंसल, पीयूष, श्रीवास्तव, मनीष, ममीडी, राधिका, एवं शर्मा, दीप्ति एम. (2016)। Shallow parsing pipeline for Hindi-English code-mixed social media text. *arXiv*. https://arxiv.org/abs/1604.03136
7. अग्रवाल, पुष्कल, गरिमेला, किरण, जोगलेकर, सागर, सास्त्री, निशांत, एवं टायसन, गैरेथ। (2020)। Characterising user content on a multi-lingual social network. *arXiv*. https://arxiv.org/abs/2004.11480
8. सुशील। (2024)। सोशल मीडिया और युवा: प्रभाव और नियंत्रण। *अंतर्राष्ट्रीय हिंदी एवं सामाजिक विज्ञानं शोध पत्रिका, 12*(2). https://doi.org/10.8855/qw1k2t27
9. कानोजिया, सागर। (2026)। Social media algorithms and the suppression of Hindi content: Social, linguistic-technical analysis in the context of Meta, YouTube and X. *ResearchGate*.
10. भारतीय मानक ब्यूरो। (2026)। *राजभाषा-हिंदी: हिंदी भाषा का उद्गम एवं विकास तथा हिंदी वर्तनी संबंधी संसाधन*। भारतीय मानक ब्यूरो।
11. भारत सरकार, राजभाषा विभाग। (2026)। *हिंदी भाषा के प्रयोग, प्रचार-प्रसार एवं राजभाषा संबंधी संसाधन*। भारत सरकार।

12. मंडल, दिलीप, एवं यादव, गीता। (2021)। *अनसोशल नेटवर्क: सोशल मीडिया और भारतीय समाज*। राजकमल प्रकाशन।

13. शर्मा, रिचा, निगम, श्वेता, एवं जैन, रेखा। (2014)। हिंदी भाषा में मत/भाव विश्लेषण की संभावनाएँ। *Opinion Mining in Hindi Language: A Survey*.

14. शर्मा, अर्णव, गुप्ता, साक्षी, मोटलानी, रवीश, बंसल, पीयूष, श्रीवास्तव, मनीष, ममीडी, राधिका, एवं शर्मा, दीप्ति एम. (2016)। हिंदी-अंग्रेजी मिश्रित सोशल मीडिया पाठ के भाषाई विश्लेषण की प्रक्रिया। *Shallow Parsing Pipeline for Hindi-English Code-Mixed Social Media Text*.

15. अग्रवाल, पुष्कल, गरिमेला, किरण, जोगलेकर, सागर, सास्त्री, निशांत, एवं टायसन, गैरेथ। (2020)। बहुभाषी सोशल नेटवर्क पर उपयोगकर्ता सामग्री का अध्ययन। *Characterising User Content on a Multi-lingual Social Network*.